प्रथम अध्याय

मध्य वर्ग : अवधारणा, स्वरूप, क्षेत्र, आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति

1. 1 वर्ग क्या है?

वर्ग वास्तव में मानव समाज की वह व्यवस्था है जहाँ समाज के व्यक्ति समूह का होना निश्चित होता है। वर्ग के अन्तर्गत एक समुदाय का व्यक्ति अपने समूहों के एक प्रकार की संस्कृति, खान-पान, कार्य योजन की विधि आदि में समता रखता है।

1. 2 वर्ग की अवधारणा

जब तक अर्थ में संचय की बात नहीं थी, तब तक मानव समाज में किसी भी प्रकार के वर्ग की संकल्पना नहीं थी। अर्थ के प्रभुत्व ने मानव समाज की संरचना को ही बदल दिया। मानव समाज ने जब से अपने आपको अर्थ संचय की प्रक्रिया से जोड़ा तब से मानव समाज में बड़े-छोटे की भावना ने घर करना आरंभ कर दिया। बहादुर सिंह परमार का यह कहना उस अधूरे सत्य की ओर संकेत है कि "मानव समाज की कल्पना के साथ हमारे मस्तिष्क में वर्गों का स्वरूप उभरता है और इन वर्गों को ही एक प्रकार से सामाजिक श्रेणीकरण का विशिष्ट रूप कहा जाता है।"[1] मानव समाज की कल्पना उस समय से प्रारंभ हो गयी थी जब मानव समूहबद्ध नहीं था। मानव अपने आपको अकेले असुरक्षित एवं कमजोर महसूस कर रहा था। उसने अपने आपको सुरक्षित एवं मजबूत बनाने के लिए धीरे-धीरे समूहबद्ध होना प्रारम्भ किया। इसकी समूहबद्धता प्रारम्भ में अर्थ पर निर्भर न होकर मानव समाज के बाहुबल पर निर्भर था। उस समय मानव के भीतर की श्रेणियाँ यह बताती हैं कि ताकत वालों का एक दल था उससे कम ताकत वालों का दूसरा तथा सबसे कमजोर तीसरा दल था। श्रेणी अथवा वर्ग को परिभाषित करते हुए प्रसिद्ध समाज वैज्ञानिक मैकाइवर तथा पेज ने कहा है "किसी वर्ग का अर्थ ऐसे श्रेणी अथवा प्रकार से है जिसके अंतर्गत व्यक्ति अथवा व्यक्ति समूह आते हैं।"[2] वर्ग या श्रेणी की जिस बात का उल्लेख मैकाइवर ने किया है उसके बहुत से चरण हैं। वर्ग की अवधारणा का प्रारम्भिक स्वरूप कार्य के आधार पर था बहु प्रचलित चतुष्यवर्ग के जिस बात से आज का समाज नहीं मान पा रहा है- ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र का आधार कार्य था। जिंसवर्ग के अनुसार "वर्ग की संकल्पना दलों के सामाजिक भेद पर आधारित है।"[3] इन्होंने वर्गों के कार्यों के संबंध में उल्लेख किया है- "एक वर्ग के अन्तर्गत ऐसे सदस्य होते हैं जो एक ही वंश से उत्पन्न हों, एक से धंधे में लगे हो, जो धन की दृष्टि से समान स्तर रखते हों और जिनके जीवन निर्वाह का ढंग भी एक जैसा हो। ऐसे सभी सदस्यों का विचार, भावनाएँ, प्रवृत्तियाँ और व्यवहार समान होते हैं।"[4] वर्ग के संबंध में लेनिन की मान्यता है- "वर्ग व्यक्तियों के बड़े-बड़े दल होते हैं ये दल एक दूसरे से भिन्न होते हैं जिनकी भिन्नता का आधार व्यक्ति की सामाजिक-उत्पादन-पद्धति के अनुसार निर्धारित किया जाता है। इस अन्तर को उत्पादन के साधनों से ज्ञात कर सकते हैं। यह अन्तर कुछ तो श्रमजीवियों के कार्यों पर आधारित होता है और कुछ सामाजिक धन के अर्जित करने के उपायों से भी ज्ञात किया जा सकता है।"[5] इस प्रकार समाज वैज्ञानिकों की दृष्टि में व्यक्ति या समूह के आर्थिक एवं सामाजिक स्तरों की भिन्नता पर आधारित होता है। इस कारण "एक विशिष्ट प्रकार के आर्थिक और सामाजिक स्तर वाले व्यक्ति एक समूह के अंतर्गत आवद्ध होकर एक विशिष्ट वर्ग का निर्माण करते हैं।"[6] प्राचीन वर्गीय अवधारणाओं के अनुसार वर्ग का निर्माण काम के आधार पर होता था। कार्य की प्रकृति के अनुसार वर्ग का निर्धारण होता था। किसी भी व्यक्ति के वर्ग का निर्धारण उसके जन्म से नहीं किया जाता था बल्कि उसका निर्धारण जन्म के बाद उसके काम के आधार पर होता

था। बाद में इस सच्चाई को समाज के चालाक लोगों के द्वारा वड़ी चालाकी से अपने पक्ष में करते हुए अपने बाल-वच्चों के वर्ग का निर्धारण जन्म से करते हुए समाज में जाति-पाति की विद्रूपता ला दिये जिसके दंश को यह देश झेल रहा है। दूसरी तरफ वर्ग के निर्माण में व्यक्ति की भी बड़ी भूमिका होती है। वर्ग के भीतर व्यक्तियों की विशेषता बड़ी भूमिका निभाती है। व्यक्ति अपनी विशेष प्रवृत्तियों से व्यक्ति समूह को आकर्षित करता रहता है। आज के समाज में व्यक्ति अपनी आर्थिक हैसियत से तथा वाजारवादी नीतियों के कारण समाज के बहुत बड़े हिस्से को अपनी तरफ आकर्षित करता है। समाज का झुकाव जब इस तरह के लोगों की तरफ होता है उस स्थिति में अर्थ की बड़ी भूमिका होती है। लोग अपनी आर्थिक हैसियत के आधार पर एक दूसरे के नजदीक आते हैं। उनका एक दूसरे के नजदीक आना उनको किसी न किसी वर्ग से जोड़ता है। मिल्टन एम.जॉर्डन ने इसी तरह के विचार को रखते हुए कहा "धन, आय, व्यवसायिक स्तर, सामुदायिक शक्ति, दल की विशिष्टता, उपभोग का स्तर और पारिवारिक पृष्ठभूमि व्यक्तियों को इनके वर्गों में प्रतिष्ठित कराने वाले आवश्यक तत्व हैं।"[7] इन्साइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका में वर्ग की अवधारणा के बारे में लिखा गया है "किसी विशिष्ट वर्ग के व्यक्ति का स्तर उसकी आय, उसकी सम्पत्ति, जीविका, रहन-सहन का स्तर, शिक्षा, उसकी व्यक्तिगत शक्ति जिसके आधार पर वह समाज के अन्य व्यक्तियों के बीच अपनी विशिष्ट स्थिति का निर्माण करता है।"[8] ल्यूक एवरसोल ने वर्ग की अवधारणा को स्पष्ट करते हुए व्यक्ति के सामाजिक स्तर को निर्णय करने वाले जिन तथ्यों को ज्यादा जरूरी बताया वह इस प्रकार है- "सम्पत्ति, आय, वंश, परम्परा और वैयक्तिक विशेषतायें।" डॉ.मंजुलता सिंह ने वर्ग की अवधारणा स्पष्ट करते हुए कहा है- "वर्ग या श्रेणी किसी समाज का आवश्यक व अनिवार्य अंग होता है, जिसका निर्माण उस समाज के श्रम, उत्पादन तथा वितरण के साधनों के द्वारा होता है। इसके साथ मनुष्य की वंश परम्परा, शिक्षा, आय रहन-सहन का स्तर तथा व्यक्ति की प्रतिभा भी उसे विशिष्ट वर्ग का व्यक्ति प्रतिष्ठित करने में सहायक होती है।"[9] बहादुर सिंह परमार ने वर्ग की अवधारणा को स्पष्ट करते हुए बताया है- "वर्ग व्यक्तियों का एक ऐसा समूह होता है जिसकी आय के स्रोतों, आचार-विचार, पारिवारिक पृष्ठभूमि, रहन-सहन, शिक्षा तथा प्रतिभा आदि में साम्यता होती है। यह साम्यता ही इन्हें आपस में आकर्षित करती है, फलस्वरूप समाज में एक वर्ग का निर्माण होता है।"[10] उपर्युक्त तथ्यों के आधार पर वर्ग के बारे में यह कहा जा सकता है कि वर्ग के निर्माण में व्यक्ति समूह के साथ-साथ व्यक्ति का भी वहुत महत्वपूर्ण योगदान रहता है। वर्ग के निर्माण में पहले जहाँ व्यक्ति के कार्यों के द्वारा व्यक्ति समूह या वर्ग को पहचाना जाता था वहीं अब वर्ग के अस्तित्व का योजन मात्र कार्यों के आधार को लेकर नहीं रह गया। वर्ग अब अनेक नये-नये तथ्यों के द्वारा निर्धारित होता है। समाज के वर्गों के विभाजन का सबसे बड़ा आधार अर्थ हो गया है, अर्थ के द्वारा कोई भी व्यक्ति किसी भी वर्ग में बड़ी आसानी से रह सकता है। कुछ परम्परावादी वर्गीय मूल्यों का निर्वाह करने वाला व्यक्ति समूह प्रारंभ में अर्थिक स्थिति में छलांग लगाने वाले व्यक्तियों को भले ही सामाजिक आचार-विचार, रहन-सहन, खान-पान, सांस्कृतिक गतिविधि आदि के कारण अपने वर्ग में सम्मिलित न करता हो परन्तु बाद में अर्थ के दवदवे के कारण किसी न किसी वर्ग में बड़ी आसानी से जगह बना लेता है। अत: हम यह कह सकते हैं कि वर्ग का निर्माण कार्य योजन, आर्थिक स्थिति, सांस्कृतिक स्थिति, खान-पान आदि के द्वारा होता है। वर्ग के निर्धारण में आज बाजार की बड़ी भूमिका है। बाजार के द्वारा परोसे गये उपभोक्तावादी वस्तुओं से भी वर्ग का निर्धारण

हो रहा है। वाजार के सामानों के द्वारा समाज के लोग किसी भी व्यक्ति को अपने वर्ग में सम्मिलित करते हैं तथा किसी भी व्यक्ति को बड़ी आसानी से निकाल देते हैं।

1. 3 वर्ग के प्रकार

भारतीय समाज में दोंनो प्रकार के वर्गों को हम बड़ी आसानी से देख सकते हैं। इन दोनों प्रकार के वर्गों में प्रथम वह वर्ग है जो श्रम के आधार पर होता है। इसके अंतर्गत आते हैं ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र। इन वर्गों के होने का आधार श्रम था। जो जिस तरह का काम करता था वह उस वर्ग में सम्मिलित हो जाता था। इस तरह से वर्ग के निर्माण के समय किसी भी व्यक्ति को जन्म से किसी भी वर्ग में सम्मिलित होने का कोई हक नहीं था। वाद में सबसे बड़ी समस्या इस के वर्ग के साथ यह हो गयी कि इस वर्ग के कुछ चालाक लोगों ने वर्ग की उक्त अवधारणा को अपना उत्तराधिकार मान लिया तथा वे जन्म के आधार पर वर्ग को सुनिश्चित करने लगे। आधुनिक युग में वर्ग के जिस स्वरूप को सबसे ज्यादा मान्यता मिली वह है अर्थ के आधार पर वर्ग का विभाजन। समाज के आधार पर मुख्यत: तीन प्रकार के वर्ग पाये जाते हैं- उच्चवर्ग, मध्यवर्ग एवं निम्न वर्ग। इन वर्गों का सम्यक् परिचय निम्नतया है-

1. 3. 1 उच्चवर्ग

राजाओं महाराजाओं, जमीनदारों तथा अन्य वंशानुगत अधिकारों वाला समूह, जिनसे उच्चवर्ग बनता है, संविधान द्वारा वंशानुगत अधिकारों को समाप्त कर देने के कारण अव उच्चवर्ग का वह स्वरूप नहीं रह गया है जो पहले था। इस वर्ग ने सत्ता की लूट में साझेदारी, ऊँचे अफसरों, बड़े उद्योगपतियों, व्यापारियों, तस्करों, फिल्मी सितारों आदि को मिलाकर जिस वर्ग का निर्माण किया आज वह उच्चवर्ग के नाम से जाना जाता है। उच्चवर्ग ने जिस नये स्वरूप को सामने प्रस्तुत किया वह व्यवहार के दृष्टिकोण से उच्चवर्ग की पुरानी व्यवस्था से भिन्न नहीं है, उसका चरित्र लगभग वही है जो वंशानुगत अधिकारों को रखते समय था। इस वर्ग की चारित्रिक विशेषता लगभग हर देश में समान रहती है।

यह वर्ग समाज में संख्या की दृष्टि से अनैधिक्य होता है। इस वर्ग के पास आर्थिक समृद्धि सभी वर्गों से अधिक होती है, यह स्वयं अनुत्पादक की भूमिका अदाकर सम्पन्नता के साथ वैभवमय जीवन जीता है। इस वर्ग में पूँजीपति, बड़े व्यवसायी, नव धनाढ्य तथा भूमिपतियों को लिया जाता है। समाज में इस वर्ग का वर्चस्व अन्य वर्गों की तुलना में अधिक होता है। अत: "समाज का पूँजीपति वर्ग सबसे प्रवल वर्ग घोषित हुआ है। पूँजी के बल पर इसका केवल जीवन की सुविधाओं पर ही अधिकार नहीं वल्कि अनेक सामाजिक तथा राजनैतिक तत्वों पर इसकी सत्ता का आधिपत्य है। नगरीय शक्ति संरचना में व्यापार, वाणिज्य और उद्योग संस्थाओं के मालिकों का प्रमुख स्थान होता है और ये उच्च प्रभावी तथा मुख्य प्रभावी समूह में सम्मिलित किये जाते हैं।"[11] डॉ0 प्रताप नारायण टंडन के अनुसार इस वर्ग में "जमींदार, पूँजीपति तथा महाजन तीन वर्ग आते हैं।"[12] इस वर्ग के दो रूप दिखाई पड़ते हैं। इस वर्ग का एक समुदाय जहाँ मानवीय मूल्यों की रक्षा तथा धर्म आदि की रक्षा के लिए धन को पानी की तरह बहाता है, वहीं इस वर्ग की एक दूसरी जीवन शैली भी है। धन के आधिक्य के कारण यह वर्ग विलासमय जीवन जीता है। इस वर्ग के अधिकांश सदस्य महत्वाकांक्षी, अभिमानी तथा स्वयं केंद्रित होते

हैं। इनके जीवन में प्राय: कृत्रिमता की अधिकता के कारण मानवीय मूल्यों का महत्व प्राय: नहीं के बराबर होता है। यह वर्ग धन के महत्व को ही सबसे ज्यादा महत्व देता है, इस कारण यह वर्ग अपने धन के बलबूते मानव समाज को अपने स्वार्थ की खातिर खरीदने की कोशिश करता है। इनके लिए कला, साहित्य, तथा संस्कृति प्रदर्शन की वस्तु होती हैं। यह वर्ग इन सब वस्तुओं को विलासिता के रूप मे ग्रहण करता है। यह वर्ग सामाजिक क्रियाकलापों में महंगी भौतिक वस्तुओं का प्रदर्शन कर अपने को कला का संरक्षक घोषित करता है। इनका चिंतन समाज केन्द्रित न होकर आत्मनिष्ठ होता है। इनके यहाँ पारिवारिक संबंधों में अनैतिकता का बोलबाला पाया जाता है। अधिकांश उच्चवर्गीय समाज का व्यक्ति मानवीय संवेदना से हीन होते हैं। इस वर्ग के लिए सामान्य मानव गुलाम की तरह होता है, जो उनकी सेवा के लिए जन्मा होता है। उच्चवर्गीय सदस्यों के लिए त्याग तथा बलिदान हथियार होता है जिसके द्वारा यह अपने स्वार्थों की पूर्ति करता है। यह शुरू से ही दूसरों का शोषण करके अपनी अस्मिता को बनाता है। इस वर्ग की अधिकता प्राय: वहीं देखी जाती है जहाँ शोषण करने की संभावना ज्यादा होती है। शोषण के द्वारा अर्जित किये गये धन से यह वर्ग समाज में अपनी पहचान, स्थान तथा दबदबे को स्थापित कर पाता है। क्षमा गोस्वामी ने इस वर्ग की नगरीय सभ्यता से होने वाले संबंध को स्थापित करते हुए लिखा है "नगरीय सभ्यता के विकास के साथ जीविका का मुद्रीकरण हुआ तो समस्त शक्ति उत्तरोत्तर पूँजी में केंद्रित होती गई। फलत: समाज का पूँजीपति वर्ग सबसे प्रबल वर्ग घोषित हुआ है। पूँजी के बलबूते पर इसका केवल जीवन की सुविधाओं पर अधिकार ही नहीं बल्कि अनेक सामाजिक तत्व इसकी सत्ता के आधिपत्य में है।"[13] इस वर्ग में पूँजीपति के अतिरिक्त बड़े-बड़े व्यापारी, अफसर, ठेकेदार, राजनेता तथा जमींदार शामिल हैं। इनका मुख्य ध्येय किसी भी प्रकार धन संचय करना होता है। आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न उच्च वर्गीय व्यक्ति सभी सुख-सुविधाओं का भोक्ता होता है। उच्चता का दंभी यह वर्ग समाज में अनेक रूपों में छाया हुआ है और मध्यवर्ग तथा निम्न वर्ग का शोषण करता है। उच्च वर्ग में भौतिक मूल्यों के प्रति अतिरिक्त लगाव विद्यमान रहता है। स्वतंत्र भारत में उच्च वर्ग के निकट आने और सुविधा भोगी होने की महत्वाकांक्षा अन्य वर्गों में भी जाग रही है।"[14] इस प्रकार हम यह कह सकते हैं कि समाज का यह वर्ग दोनों प्रकार के रूपों में समाज में विद्यमान रहता है परन्तु यह वर्ग हर समय समाज के दूसरे वर्गों या व्यक्तियों का शोषण करता है। इसी शोषण पर यह वर्ग समाज में अपनी धाक जमाता है, यह वर्ग समाज का सबसे धनी वर्ग होता है क्योंकि इस वर्ग के पास वैध-अवैध तरीकों से जमा किया अथाह धन होता है। धन बटोरने की बड़ी होड़ इस वर्ग में होती है। धन के लिए नैतिक या अनैतिक साठ-गाँठ भी रहता है। धन से यह जनप्रतिनिधियों को खरीदता है। समाचारपत्र, उद्योग, कला-साहित्य का पोषण करने वाली संस्थाओं तथा धार्मिक संस्थानों के माध्यम से पत्रकारों, कलाकारों तथा धार्मिक क्षेत्र के प्रभावशाली व्यक्तियों को सदैव अपने साथ रखता है, कानून एवं व्यवस्था की मशीनरी अपने साथ रखता है। इस प्रकार यह निष्कंटक राज्य करता रहता है। यह वर्ग हर चीज को धन से तौलता है तथा धन को ही सर्वोपरि मानता है। महानगरीय समाज के साहित्य, संस्कृति, कला के नाम पर अपना उल्लू सीधा करने में लगा रहता है। बड़े-बड़े आयोजनों, सभा समीतियों में यह वर्ग अपनी प्रतिभाशीलता एवं संवेदनशीलता का दम्भ हर समय भरता रहता है।

1. 3. 3 भारतीय मध्य वर्ग के उदय की स्थिति

भारत में मध्यवर्ग का व्यवस्थित उदय अंग्रेजी साम्राज्य के फलस्वरूप हुआ। उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में भारत में यह वर्ग दिखने लगा था। मध्यवर्ग का उदय इस देश में उस समय दिखाई देने लगा था जब अंग्रेजी शासन व्यवस्था अपनी जड़ें जमाने की फिराक में था। अंग्रेजों ने अपनी शासन व्यवस्था को सही ढंग से चलाने के लिए भारतीय समाज से कुछ ऐसे विचौलियों को चुन लिया था जो उनकी व्यवस्था को सुविधा मुहैया करायें तथा पारिश्रमिक के रूप में कुछ लेकर संतोष करें। भारतीय समाज में मध्यवर्गीय समुदाय का जो स्वरूप आज देखने में मिल रहा है वह अंग्रेजों के आगमन पूर्व इस देश में नहीं था। समाज की संरचना से हम इस बात को बड़ी आसानी से समझ सकते हैं कि शासक वर्ग के नजदीक समाज का एक ऐसा वर्ग हर समय रहता है जो समाज के सामान्य व्यक्तियों एवं प्रशासन के बीच तालमेल स्थापित करने में अहम भूमिका निभाता है। ऐसे लोगों को मध्यवर्गीय समाज का व्यक्ति कहा जा सकता है। इनके पास उत्पादन का अपना संसाधन नहीं होता। मध्यवर्ग की बड़ी विशेषता होती है कि यह वर्ग समाज के दूसरे वर्ग के संसाधनों से अपनी आवश्यकताओं को पूरा करता है। इस वर्ग के पास की संवेदनशीलता को यदि किसी शासन व्यवस्था ने सबसे ज्यादा प्रभावित किया है तो वह है अंग्रेजी शासन व्यवस्था। इस शासन ने समाज के बीच के सारे रिश्तों को बदल दिया। अंग्रेज यहाँ अर्थ के उद्देश्य को लेकर आये थे। अर्थ ने अपने तंत्र में अग्रेजों समेत कुछ भारतीयों को भी अपने भीतर समेट लिया। फलत: इन लोगों को अर्थ के अलावा और कुछ जैसे सूझता ही नहीं था। अर्थ-तंत्र की सभी गड़बड़ियाँ इस वर्ग में कूट-कूट कर भर गयीं थीं, सुप्रसिद्ध विचारक हूमायूँ कबीर ने लिखा है "समस्त प्राचीन मूल्यों और विश्वासों को चुनौती दी जा रही थी। सामाजिक, और राजनीतिक संस्थाएं तीव्र गति से टूट रहीं थीं प्राचीन सामाजिक संगठन अव्यवस्थित हो रहा था। नए तत्व उभर रहे थे, जिनकी बीते युग से कोई मिसाल नहीं मिलती।"[14] यह नया बदलाव प्राय: सभी देशों में इस तरह से था कि इस वर्ग की कोई एक ऐसी रूपरेखा नहीं दी जा सकती है जो समस्त देश के मध्यवर्ग को अपने भीतर समेट सके। इसी कारण लूयास और माडे को यह कहना पड़ा "किसी भी व्यक्ति ने मध्यवर्ग की ऐसी परिभाषा नहीं की जो संक्षिप्त संतोषजनक और अशिथिल हो।"[15] समाजशास्त्री डॉ० बी० बी० मिश्र ने मध्यवर्ग के उदय की इन्हीं स्थितियों को स्पष्ट करते हुए लिखा "पश्चिम में मुख्यत: इंग्लैंड में उदाहरण के लिए मध्यवर्ग का उदय आर्थिक एवं तकनीकी बदलाव के कारण हुआ। उसका बहुत सारा भाग व्यवसाय एवं तकनीकी कार्यों में लिप्त था इस आधार पर मध्यवर्ग की विशेषता को यदि देखा जाय तो इस वर्ग को समझने में बड़ी सुविधा होगी तथा इस वर्ग के नये से नये रूप को बड़ी आसानी से समझा जा सकता है।

1. 3. 2 मध्यवर्ग: अवधारणा एवं स्वरूप

यह वर्ग उच्च्वर्ग और निम्न वर्ग के बीच का होता है। इस वर्ग की अभिलाषाएँ उच्चवर्ग के समान होती है। इसी कारण यह वर्ग हर समय अर्थाभाव झेलता रहता है। आज प्राय: यह देखा जा रहा है कि अर्थाभाव के कारण यह वर्ग समाज के नैतिक आदर्श को खोता चला जा रहा है इसलिये इस वर्ग की सामाजिक नैतिकता भी दाव पर लगी दिखती है। इस वर्ग के भीतर आने वाले लोगों की व्यापकता को देखते हुए इस वर्ग के बारे में कोई निश्चित परिभाषा देना मुश्किल है। फिर भी विद्वानों ने अपने-अपने

हिसाब से इस वर्ग को परिभाषित करने का प्रयास किया है। आधुनिक भारत में इस वर्ग की अवधारणा वहाँ से बननी प्रारंभ हो गयी थी जब अंग्रेजी राज में इस भाषा से फायदा उठाने वाले मध्यवर्गीय समाज का उदय हो गया था। उन लोगों ने अपनी सुविधाओं को सरकार के राजस्व, न्याय अथवा पुलिस प्रशासन में नौकरी मिलने से अपने हक में कर लेते थे। पवन वर्मा ने मध्यवर्ग की उक्त प्रवृत्ति तथा उत्पत्ति को इस प्रकार स्पष्ट किया है "शिक्षित पृष्ठभूमि वाले ये मध्यवर्गीय भारतीय एक तरह के सामाजिक नैरंतर्य का प्रतिनिधित्व भी करते थे। मध्यवर्ग की इसी ऐतिहासिक स्मृति के प्रभाव में आज भी 'बाबू' का अर्थ 'अंग्रेजी लिखने वाला देशी क्लर्क बताता है।"[16] इन्होंने इसी क्रम में आगे लिखा कि जनसाधारण इस अशिक्षित बहुलांश के मुकाबले में बाबुओं की संख्या जरूर कम थी लेकिन एक नये किस्म की सामाजिक संस्कृति के प्रमुख तत्व के रूप में उनकी शिनाख्त होनी प्रारम्भ हो गयी थी। 1973 में बंकिमचन्द्र चटर्जी ने इस वर्ग पर कटाक्ष करते हुए लिखा "ये बाबू काफी बातूनी, एक खास विदेशी भाषा में पारंगत और अपनी मातृभाषा को नीची निगाह से देखने वाले होंगे.....कुछ बेहद योग्य बाबू तो ऐसे भी होंगे जो अपनी मातृभाषा में बात-चीत करने में अक्षम निकलेंगे.....विष्णु की तरह उनके भी दस अवतार होंगे- क्लर्क, अध्यापक, ब्रह्म समाज के सदस्य, मुनीम, डॉक्टर, वकील, मजिस्ट्रेट, जमींदार, संपादक और बेरोजगार..... ये बाबू घर में जलपान और दोस्तों के घर में सुरापान करेंगे। ये तवायफों के अड्डों और मालिकों के यहाँ फटकार खायेंगे।"[17] उल्लेखनीय है कि भारत में मध्यवर्ग की पहचान अंग्रेजी शासन में ही दिखाई पड़ने लगी थी। इस वर्ग को परिभाषा में आवद्ध करते हुए विद्वानों ने इसकी विशेषताओं, दुर्वलताओं, सीमाओं आदि का उल्लेख किया है तथा मध्यवर्ग की विशेषताओं पर प्रकाश डाला है। मध्यवर्ग को स्पष्ट करते हुए डॉ0 श्यामसुन्दर घोष ने लिखा "यह वर्ग समाज के वीच का हिस्सा होता है, जो समाज को अनुप्रस्थ ढंग से विभाजित करता है और जिसमें कमोंवेश कर एक ही रूतबे या ओहदे के लोग सम्मिलित होते हैं जिनकी विशेष आर्थिक और सामाजिक स्थिति एवं प्रवृत्ति होती है जो बहुधा उनकी आय, व्यवसाय, शिक्षा और वंश परम्परा से निर्धारित होती है।"[18] यह वर्ग स्थान, सामाजिक स्थिति आदि के आधार पर निर्धारित होता है। आक्सफोर्ड इलस्ट्रेटेड के अनुसार "मध्यवर्ग समाज के उच्च और निम्न वर्ग के वीच का वर्ग है जिसमें व्यवसायिक, व्यापारिक अथवा क्रय विक्रय करने वाले लोग शामिल होते हैं।"[19] चेम्बर्स डिक्सनरी में मध्यवर्ग की परिभाषा इस प्रकार दी गयी है "मध्यवर्ग में वे सभी व्यक्ति आ जाते हैं जो अभिजात्य वर्ग और श्रमिक वर्ग के मध्य होते हैं।" वेवस्टर न्यू ट्वेन्टियथ डिक्सनरी के अन्तर्गत मध्य वर्ग की परिभाषा निम्नवत दी गयी है "मध्यवर्ग के अन्तर्गत प्रोलेटेरियट, छोटे व्यवसायों के स्वामी, पेशेवर लोग, बाबू वर्ग और किसान होते हैं।"[20] इस वर्ग में इन्होंने ज्यादा लोंगो को सम्मिलित किया है। हिन्दी साहित्य कोश में मध्यवर्ग की विशेषता को बताते हुए उसके व्यक्ति रूपों की चर्चा को भी किया गया है "पूँजीवादी व्यवस्था ने समूचे समाज को तीन भागों में विभाजित किया है- 1 वुर्जुआ, 2 मध्यवर्ग अर्थात मिडिल क्लास, 3 निम्न वर्ग। मध्यवर्ग सामन्तवादी व्यवस्था में पाया नहीं जाता, क्योंकि उस समय जमींदार और किसान का संवंध सीधा था, किन्तु पूंजीवादी आर्थिक व्यवस्था ने समाज को इतना जटिल कर दिया है कि एक मध्यवर्ग की भी आवश्यकता हुई, जो इस जटिल व्यवस्था के संघटन सूत्र को संभाल सके। इस वर्ग में नौकरी-पेशा, शिक्षक, क्लर्क और अन्य साधारण लोग आते हैं। मध्यवर्ग विशेषत: बुद्धि प्रधान वर्ग माना गया है और सामाजिक क्रान्ति के प्राय: समस्त विचारों का सर्जन मध्यवर्ग में होता है।"[21] इस वर्ग को परिभाषित करते हुए कम्युनिस्ट पार्टी के घोषणा पत्र में मार्क्स तथा एंगेल्स ने लिखा "मध्यम वर्ग के निम्न स्तर-छोटे

कारोबारी, दूकानदार, आम तौर पर किराया-जीवी, दस्तकर और किसान ये सब धीरे-धीरे सर्वहारा वर्ग की स्थिति में पहुँच जाते हैं। कुछ तो इसलिए कि जिस पैमाने पर आधुनिक उद्योग चलता है उसके लिए उनकी छोटी पूंजी पूरी नहीं पड़ती और बड़े पूंजीपतियों के साथ होड़ में वह डूब जाती है; और कुछ इसलिए कि उत्पादन के नये-नये तरीकों से निकल आने के कारण उनके विशिष्टीकृत कौशल का कोई मूल्य नहीं रह जाता है।"[22] मार्क्स तथा एंगेल्स ने सर्वहारा वर्ग के विस्तार के कारणों की चर्चा करते हुए मध्यवर्ग के अन्य वर्ग के साथ विलय होने की बात को भले ही स्वीकार किया लेकिन वास्तविकता और ही कुछ कहती है क्योंकि उच्चवर्ग टूटकर जब कहीं जाता है तो उसका विलय मध्यवर्ग में ही होता है तथा जब निम्न वर्ग कुछ विकास करके अपना उत्थान करता है तो उसको भी शरण मध्यवर्ग ही देता है। इन्होंने एक अन्य जगह इस वर्ग के विकास के कारण तथा अन्य वर्ग में विलय होने के कारणों की तरफ संकेत करते हुए स्पष्ट किया "उन देशों में जहाँ आधुनिक सभ्यता का पूरा विकास हो चुका है, निम्न-पूंजीपतियों का एक नया वर्ग बन गया है जो सर्वहारा वर्ग और पूजीपति वर्ग के बीच झूला करता है और पूँजीवादी समाज के एक पूरक अंग के रूप में सदा अपने को ताजा करता रहता है।"[23] मार्क्स तथा एंगेल्स ने मध्यवर्ग को समाज का बहुत अच्छा वर्ग नहीं माना। इन्होंने इस वर्ग की कमजोरियों की तरफ इशारा करते हुए अपने उग्र रूप का ही परिचय दिया है-"निम्न मध्यम वर्ग के लोग-छोटे कारखानेदार, दूकानदार, दस्तकार और किसान-ये सब मध्यम वर्ग के अंश के रूप में अपने अस्तित्व को नष्ट होने से बचाने के लिए पूँजीपति वर्ग से लोहा लेते हैं। इसलिए वे क्रांतिकारी नहीं, रूढ़िवादी हैं। इतना ही नहीं, चूंकि वे इतिहास के चक्र को पीछे की ओर घुमाने की कोशिश करते हैं इसलिए वे प्रतिगामी हैं। *******खतरनाक वर्ग समाज का कचड़ा, पुराने समाज के निम्नतम स्तरों से निकला हुआ और निष्क्रियता के कीचड़ में सड़ता हुआ समुदाय जहाँ-तहाँ सर्वहारा क्रांति की आंधी में पड़कर आंदोलन में खीचा सकता है, लेकिन उसके जीवन की अवस्थाएँ उसे प्रतिक्रियावादी षड़यंत्र के भाड़े के टट्टू का काम करने के लिए कहीं अधिक मौंजूं बना देती हैं।"[24] मध्यवर्ग को परिभाषित करते हुए आर.एच.ग्रेटन ने लिखा "मध्यवर्ग का नाम ही समाज के स्तर की ओर संकेत करता है। यह वर्ग आज भी मौजूद है और उसकी अपनी विशिष्टताएँ हैं। यह वर्ग अपनी विशिष्टताओं अथवा गुणों में इतना मिला-जुला है कि इस वर्ग को अन्य वर्ग के मध्य माना जाता है।"[25] मध्यवर्ग के बारे में डॉ.बी.बी.मिश्र ने विस्तार से चर्चा करते हुए इस वर्ग में आने वाले व्यक्तियों की सूची को प्रस्तुत करते हुए लिखा "इस वर्ग के सौदागरों, एजेंटों और आधुनिक व्यापारिक फर्मों, के मालिक और संचालक सामिल होते हैं। इनमें शीर्ष स्थान के व्यक्ति सम्मिलित किये जाते हैं, जिनका संबंध थोक विक्री, व्यापार, निर्माण अथवा वित्तीय मामलों से है। वेतन पाने वाले कार्यकर्ता जैसे मैनेजर, निरीक्षक, सुपरवाइजर, तकनीकी कर्मचारी तथा बैंक उद्योग एवं अन्य व्यापारिक संस्थानों में उच्च वेतन पाने वाले अधिकारी वाणिज्य के चेम्बरों और एसोसिएशनों से लेकर राजनीतिक संगठनों, व्यापारिक संघों, दानशील, सांस्कृतिक और शैक्षिक निकायों में कार्य करने वाले लोग मध्यवर्ग में आते हैं। इनके अतिरिक्त उच्च न्यायालयों तथा सरकारी सचिवों को छोड़कर सचिवालयों के कर्मचारी भी इसी वर्ग में परिगणित होते हैं। उपर्युक्त सरकारी और गैर सरकारी लोगों के अतिरिक्त मुख्य व्यवसायों के अवैतनिक कार्यकर्ता, वकील, डॉक्टर, प्रवक्ता और प्राध्यापक, लेखक, पत्रकार, संगीतज्ञ, तथा अन्य कलाकार धार्मिक उपदेशक, पुजारी भी इसी वर्ग के सदस्य होते हैं। इनके अतिरिक्त जमींदारी में लगे हुए वेतन पाने वाले कर्मचारी, विश्वविद्यालय अथवा इसी प्रकार के स्तर की संस्थाओं में पूरे वेतन प्राप्त विद्यार्थी, माध्यमिक स्कूलों के उच्च स्तर के कार्यकर्ता

, अध्यापक और स्थानीय निकायों के अधिकारी तथा राजनीतिक कार्यकर्ता भी मध्यवर्ग की सीमा में आते हैं।"[26] डॉ.बी.बी.मिश्र के विस्तार से की गयी इस चर्चा से यह स्पष्ट हो जाता है कि मध्यवर्ग की सीमा समाज के अन्य वर्ग की तुलना में बहुत बड़ी है।इस वर्ग के अंतर्गत विभिन्न आर्थिक स्तरों के लोग सम्मिलित हो जाते हैं।यह वर्ग उच्चवर्ग तथा निम्नवर्ग की तुलना में अधिक व्यापक, संवेदनशील, प्रेरक तथा अपनी विशिष्ट दुर्बलताओं से ग्रस्त होता है।मध्यवर्ग की सामान्य विशेषताएँ हैं जिसके कारण यह वर्ग समाज के अन्य वर्गों से अलग दिखता है।इस वर्ग में आत्म-निर्भरता तथा जीवन और परिस्थितियों के साथ संघर्ष करने की क्षमता अद्भुत होती है।यह विषम आर्थिक परिस्थितियों के साथ ही राजनीतिक एवं सामाजिक समस्यायों से आक्रांत रहता है।यह वर्ग परिवर्तन के लिए व्याकुल, असंतोष, आक्रोश, विवशता और घुटन में जीता है।मध्यवर्गीय व्यक्ति प्रदर्शनप्रिय, महत्वाकांक्षी, आत्मकेंद्रित तथा कल्पनाप्रिय होता है।अत: मध्यवर्ग समाज का प्रेरक वर्ग है।एक ओर सतत् संघर्ष और दूसरी ओर समाज में सुधार की कामना भी रखना अपना परम उद्देश्य समझता है।गजानन माधव मुक्तिवोध ने लिखा "मध्यवर्ग की सांस्कृतिक चेतना, भारतीय प्राचीनता की गौरव-भावना के नाम पर, सामन्ती संस्कार लिए हुए थी।उन संस्कारों को विभिन्न प्रकार से गौरव भी प्रदान किया, अर्थात् उन संस्कारों के नये संस्करण भी हुए।"[27] मध्यवर्ग के बारे में डॉ0 सीमा गुप्ता ने विस्तार से चर्चा करते हुए लिखा "मध्यवर्ग इतना वृहत है कि कहीं वह उच्चवर्ग के निकट दिखाई देता है, कहीं वह निम्नवर्ग के साथ, पर वस्तुत: इसकी स्थिति त्रिशंकु जैसी होती है।वंश, आय, शिक्षा, रहन-सहन, अभिरुचि, सामाजिक मर्यादा के अनुसार मध्यवर्ग समाज के अन्य वर्गों से अलग पहचाना जा सकता है।यह वर्ग आज भी शकुन-अपशकुन, भाग्यवाद, कर्मवाद पाप पुण्य, भक्ति, पूजा, ब्रत, ज्योतिष आदि के बंधनों में जकड़ा हुआ है।यद्यपि मध्यवर्ग समाजवादी प्रक्रिया को समाज के लिए आवश्यक मानकर एक वर्ग हीन समाज की कल्पना करता है और संसार की अनेक क्रांतियाँ उसी के नेतृत्व में हुई हैं।फिर भी मध्यवर्गीय व्यक्ति परम्परागत रूढ़िवादिता, भाग्यवादी निष्क्रियता एवं धार्मिक अंधविश्वास की ओर झुकता है।यह वर्ग चाह कर भी धार्मिक रूढ़ियों और अंधविश्वासों को नहीं छोड़ पाता।"[28] डॉ0 सरिता राय ने मध्यवर्ग को स्पष्ट करते हुए लिखा "जहाँ तक मध्यवर्ग का प्रश्न है, वह पूँजीपति और मजदूर के बीच की कड़ी माना गया है।लेकिन आर्थिक उत्पादन में न यह उत्पादन-साधनों का स्वामी होता है और न किसी भौतिक मूल्य का उत्पादन करता है।अत: वह दफ्तरी कर्मचारी और बुद्धिजीवी के रूप में शासक वर्ग की आवश्यकता पूरी करता है।"[29] मध्यवर्ग के क्षेत्र के विस्तार को देखते हुए इस वर्ग को किसी एक निश्चित परिभाषा के अंतर्गत वांध नहीं सकते।समाज निर्माण मात्र देश के आधार पर अलग-अलग नहीं वरन भौगौलिक स्थिति, राजनीतिक स्थिति, धार्मिक स्थिति एवं सांस्कृतिक स्थिति आदि के कारण होता है।यह वर्ग समाज का ऐसा वर्ग होता है जो समय के परिवर्तन के साथ-साथ बहुत जल्दी बदलता रहता है।इसका स्वरूप ऐसा है कि कहीं भी यह बड़े आराम से फिट हो जाता है।अत: इस वर्ग के लक्षण को ही हम बता सकते हैं इसे परिभाषित करना सहज नही है।इस वर्ग की सबसे बड़ी विशेषता यह होती है कि यह वर्ग समाज का सबसे संवेदनशील होता है, यह अलग बात है कि अपने सभी कृत्यों में यह वर्ग अपने स्वार्थ को बचाये रहता है।अपने इसी खास गुण के कारण इसको समाज वह स्थान नहीं मिल पाता है जो इसको मिलना चाहिए।विचारकों के द्वारा यह वर्ग निरन्तर आलोचित होता रहता है।

1. 3. 4 क्षेत्र

मध्यवर्ग के क्षेत्र की जहाँ तक वात है यह वर्ग समाज के अन्य दो वर्गों की तुलना में वहुत वड़ा है। इस वर्ग में समाज के दोनों वर्गों के लोग टूटकर समाहित होते रहते हैं। इस कारण इस वर्ग की पकड़ समाज के सभी वर्गों में समान ढंग से होती है। इस वर्ग के विस्तार तथा व्यक्तियों के पास की विलक्षण क्षमता के कारण समाजशात्रियों ने इसको तीन भागों में बाँटा है -उच्चमध्यवर्ग, मध्यमध्यवर्ग एवं निम्नमध्यवर्ग । मध्यवर्ग के क्षेत्र का निर्धारण इन तीनों वर्गों के आधार पर ही किया जा सकता है।

1. 3. 4. 1 उच्चमध्यवर्ग

समाज का यह वर्ग उच्चवर्ग से कटकर वनता है अथवा यह वहाँ से निर्मित होता है जहाँ समाज का मध्यमध्यवर्ग अपने वर्ग से छलाँगने की कोशिश में जुटा होता है। इस वर्ग की सामाजिक स्थिति समाज के सभी वर्गों से मजवूत होती है। यह वर्ग समाज के नब्ज को समाज के अन्यवर्गों की तुलना में जल्दी समझ जाता है। इस वर्ग की पहचान समाज के वड़े से वड़े नेता से लेकर पूजीपतियों तथा समाज के अन्य सभी वर्गों से होने के कारण यह अपने हितों को सव जगह वड़ी आसानी से पूरा कर लेता है। इस वर्ग के वदलते मुखौटे के कारण को स्पष्ट करते हुए कार्ल मार्क्स एवं फ्रेडरिक एंगेल्स ने लिखा "अन्त में, वर्ग संघर्ष जब निर्णायक घड़ी के नजदीक पहुँच जाता है, तव शासक वर्ग में, वास्तव में सम्पूर्ण पुराने समाज के अन्दर, हो रही विघटन की प्रक्रिया इतना प्रचंड और प्रत्यक्ष रूप धारण कर लेती है कि शासक का वर्ग एक छोटा-सा हिस्सा उससे अलग होकर क्रांतिकारी वर्ग के साथ-जिसके हाथ में भविष्य होता है-आ मिलता है। इसलिए, जिस तरह पहले के युग में सामन्तों का एक भाग टूटकर पूँजीपति वर्ग से आ मिला था, उसी तरह पूँजीपति वर्ग का एक हिस्सा, और खास तौर से पूँजीवादी विचारकों का एक हिस्सा, जिसने अपने को इतिहास की समग्र गति को सैद्धान्तिक रूप में समझने के योग्य स्तर पर उठा लिया है, सर्वहारा वर्ग में आकर मिल जाता है।"[30] मध्यवर्ग का यह वर्ग समाज सभी उच्च पदस्थ सरकारी कर्म चारियों से वहुत मजवूत संवंध रखता है। इस कारण समाज के निम्नस्तर के कर्मचारियों को ऊँची निगाह से नहीं देखते हुए भी अपने सभी मतलव को वखूवी साध लेता है। इस वर्ग की महत्ता यह होती है कि यह वर्ग समाज के किसी भी वड़े से वड़े अधिकारी के तलवा अपने मतलव को साधने के लिए वेहिचक चाट सकता है। इस वर्ग के क्षेत्र को स्पष्ट करते हुए वी० वी० मिश्र ने लिखा "इस वर्ग में सौदागरों, एजेंटों और आधुनिक व्यापारिक फर्मों, के मालिक और संचालक सामिल होते हैं। इनमें शीर्ष स्थान के व्यक्ति सम्मिलित किये जाते हैं, जिनके संबंध थोक विक्री, व्यापार, निर्माण अथवा वित्तीय मामलों से है। वेतन पाने वाले कार्यकर्ता जैसे मैनेजर, निरीक्षक, सुपरवाइजर, तकनीकी कर्मचारी तथा वैंक उद्योग एवं अन्य व्यापारिक संस्थानों में उच्च वेतन पाने वाले अधिकारी वाणिज्य के चेम्वरों और एसोसिएशनों से लेकर राजनीतिक संगठनों, व्यापारिक संघों, दानशील आते हैं।"[31]

1. 3. 4. 2 मध्यवर्ग

'मध्यवर्ग' पिछली शताब्दी का बहु-प्रचलित एवं परिचित शब्द है। इस शब्द के सुनने से सहज ही यह बात समझ में आने लगती है 'समाज का ऐसा समूह जो न तो बहुत अधिक धनी होता है और न ही बहुत गरीब।' इस वर्ग के उदय के पीछे सबसे बड़ी भूमिका है अर्थ की। यह वर्ग अपने आपको सामाजिक आदर्शों एवं लक्ष्यों से अपने आपको बांधकर रखता है। चूँकि इस वर्ग का संबंध समाज के उच्चवर्ग एवं निम्न दोंनो से रहता है इस कारण इस वर्ग के अंतर्गत समाज के दोनों वर्गों के लक्षण पाये जाते हैं। यह वर्ग अपने आपमें पूरी सख्सियत के साथ समाज में उपस्थित रहता है। इसके वावजूद निरन्तर यह वर्ग कभी उच्चवर्ग से टूट कर मध्यवर्ग में आ मिलता है तो कभी निम्नवर्ग से विकास करते-करते मध्यवर्ग में शामिल हो जाता है। आकार की दृष्टि से यह वर्ग समाज का सबसे बड़ा वर्ग है। यह वर्ग अपने आप में विचित्र है। इस वर्ग के पास विविधता का भंडार होता है, इस कारण विद्वानों ने इस वर्ग के क्षेत्र को निर्धारित करते हुए इसकी विशेषताओं को बताया। मध्यवर्ग के कुछ लोग आर्थिक उँचाई छूते-छूते उच्चवर्ग के नजदीक पहुच जाते हैं। इसके बावजूद इसको उच्चवर्ग में समाहित नहीं किया जा सकता। हर वर्ग की अपनी व्यवहारिक सीमाएँ होती हैं। इस विशेषता के आधार पर वर्ग निर्धारण में अर्थ की भूमिका चाहे जितनी प्रबल हो लेकिन वही सब कुछ नहीं होता। इस वर्ग के कुछ लोग सुखमय जीवन विताते हैं तो कुछ लोग बड़ी कठिनाई से। महान उपन्यासकार यशपाल ने लिखा- "मध्यम श्रेणी अनिश्चित स्थिति के लोगों की अद्भुत पंचमेल खिचड़ी है। कुछ लोग मोटरों और शानदार बँगलों का व्यवहार करते हैं और विनय से अपने आपको इस श्रेणी का बताते हैं। दूसरे लोग मजदूरों सी असहाय स्थिति में रहकर भी केवल सफेदपोश और शिक्षित होने के वल पर इस श्रेणी का अंग होने का दावा करते हैं।"[33] इस वर्ग के अध्ययन के लिये यह जरूरी है कि इसको विभिन्न समुदायों में बाँट कर देखा जाय। विभाजन की दृष्टि से इस वर्ग को तीन वर्गों में बाँटा जा सकता है- **उच्च मध्यवर्ग, मध्यम मध्यवर्ग, निम्न मध्यवर्ग**। मध्यवर्ग का किया गया यह विभाजन अध्ययन की सुविधा के दृष्टिकोण से भले ही उचित हो लेकिन यह विभाजन मानक विभाजन नहीं हो सकता। सफेदपोशी के दृष्टिकोण से इस वर्ग के भीतर इस विभाजन को नहीं किया जा सकता। ऊपर से देखने पर इस वर्ग के भीतर आने वाले तीनों वर्गों में आचार-विचार की भिन्नता नहीं पायी जाती। प्राय: यह देखा जाता है कि निम्न मध्यवर्ग एवं उच्चमध्यवर्ग के भीतर व्यवहारगत असमानता पायी जाती है परन्तु मध्यम मध्यवर्ग का संबंध दोनों वर्गों से समान रूप से रहता है। मध्यममध्यवर्ग का उदय ही मध्यवर्ग के दोनों अतिछोरों के अतिक्रमण से होता है। मध्यवर्ग के तीनों वर्गों का विवरण इस प्रकार है---

1. 3. 4. 2. 1 उच्च मध्यवर्ग

मध्यवर्ग का यह वर्ग कुछ हद तक सुखमय जीवन विताने में सफल होता है। इस वर्ग की स्थिति मध्य मध्यवर्ग एवं निम्न मध्यवर्ग से अच्छी होती है। इस वर्ग की स्थिति उच्चवर्ग एवं मध्यम मध्यवर्ग के बीच की होती है। इस वर्ग का व्यक्ति उच्चवर्ग की स्थिति को पाने के लिये हर समय जुगाड़ में रहता है। इस वर्ग की आकांक्षा हर समय उच्चवर्ग में विलय हो जाने की रहती है। इस कारण यह वर्ग उच्चवर्ग की भोगवादी तथा विलासपूर्ण जीवन के प्रभाव से यह वर्ग अधिक त्रस्त रहता है। यह वर्ग एक ओर भारतीय संस्कृति से जकड़ा हुआ होता है तो दूसरी ओर पाश्चात्य सभ्यता से ग्रस्त रहता है। इस वर्ग के

सदस्यों में छोटे-छोटे उद्योगपति, धनी व्यापारी तथा वे शिक्षित व्यक्ति आते हैं जो किसी संस्था या सरकारी कार्यालयों में उच्च पदाधिकारी होते हैं।

1. 3. 4. 2. 2 मध्यम मध्यवर्ग

यह वर्ग उच्चमध्यवर्ग एवं निम्न मध्यवर्ग के बीच का वर्ग होता है। यह वर्ग समाज का सबसे संवेदनशील होने के साथ सामाजिक आदर्शों एवं लक्ष्यों को निश्चित करने वाला होता है। इस वर्ग के द्वारा सोची गयी प्राय: बातें धीरे-धीरे अन्यवर्गों में अपना स्थान बनाती हैं तथा सामाजिक गति को देती हैं। यह वर्ग अन्य वर्गों में होने वाले परिवर्तनों की सूचना देता है। समाज में इस वर्ग की बहुत महत्वपूर्ण भूमिका होती है। राष्ट्रीयमुक्ति आन्दोलन में इस वर्ग की बहुत बड़ी भूमिका थी। यह वर्ग बाजारवादी शक्तियों के निशाने पर सर्वाधिक होता है। इस देश में इस वर्ग की संख्या सबसे ज्यादा है। इस वर्ग के भीतर मझले किस्म के व्यापारी, शिक्षित व्यक्ति आते हैं जो किसी संस्था या सरकारी कार्यालयों में पदाधिकारी आदि होते हैं।

1. 3. 4. 2. 3 निम्न मध्यवर्ग

यह वर्ग सबसे खराब स्थिति में रहता है। यह वर्ग बड़ी मुश्किल से जीवन यापन करता है। आर्थिक दुर्व्यवस्था से ग्रस्त रहता है। कथित परम्पराओं, कुलीनताओं एवं जर्जर रूढ़िग्रस्त मर्यादाओं का बोझ ढोने का काम इसी वर्ग के कंधों पर होता है और उसे ढोते-ढोते उसका दम निकलने लगता है। इसके बावजूद उस बोझ को ढोने के लिए यह अभिशप्त है। कभी-कभी यह वर्ग विद्रोह कर बैठता है। इस वर्ग के सदस्यों में शिक्षित, बुद्धिजीवी, सफेदपोश माहवारी वेतनभोगी कर्मचारी, छोटे-छोटे उद्योग धंधे करने वाले तथा सामान्य व्यापारी आते हैं। आर्थिक विषमताओं में पिसता यह वर्ग केवल जीवन की प्रारम्भिक आवश्यकताओं को ही पूरा कर पाता है।

डॉ बी0 बी0 मिश्र ने मध्यवर्ग के सदस्यों की सूची इस प्रकार प्रस्तुत की है --

1 "आधुनिक व्यापारी, फार्मों के संचालकों, सौदागरों (व्यापारियों) और एजेंटों का वर्ग जिसमें सक्रिय भागीदार और निर्देशक भी सम्मिलित हैं, पर इनमें ऊँचे, थोक व्यापारी, निर्माता आदि की गणना न की जाय।

2 प्रबंधक, निरीक्षक, पर्यवेक्षक और बैंक-व्यवहार, व्यापार तथा निर्माण व्यापार में नियुक्त तकनीकी कर्मचारी-वर्ग।

3 चेम्बर्स ऑफ कॉमर्स से लेकर अन्य ट्रेड एसोसियन्श से राजनीतिक दलों, ट्रेड यूनियनों, लोकोपकारी संस्थाओं, सांकृतिक और शैक्षणिक संस्थाओं के वृहद दल के उच्च वैतनिक अधिकारी।

4 सिविल कार्मचारी और अन्य सरकारी कार्मचारियों का मुख्य दल, जिसमें कृषि, शिक्षा, सरकारी निर्माण विभाग, पविहन, संचारण आदि विभागों के कर्मचारी सम्मिलित हैं।

5 वैतनिक या अन्य प्रकार के मुख्य रूप से मान्य व्यवसाय यथा- वकील, डॉक्टर, लेक्चरर प्रोफेसर, लेखक का उच्च मध्यवर्ग, पत्रकार, संगीतज्ञ, कलाकार, धार्मिक प्रचारक और पुरोहित।

6 भूमि के मध्य स्थिति मालिक यथा-किसान मालिक, राजस्व देने वाला किसान, विना कमाई पर निर्भर रहने वाले या भूमि का आंशिक रूप से स्वयं प्रबंध करते हों।

7 अच्छे दुकानदार तथा होटल वाले, जिसमें इस क्षेत्र में काम करनेवाले प्रवंधक, लेखाकार और संयुक्त पूँजी कंपनियों में नियुक्त अन्य अधिकारी भी सम्मिलित हैं।

8 ग्राम्य क्षेत्र में भूमि सम्पदा पर अनेक वैतनिक प्रबन्धों पर नियुक्त करने वाले वगान उद्योग में लगे हुए उद्योगकर्ता।

9 विश्वविद्यालय या किसी स्तर की शिक्षा संस्था में उच्च शिक्षा प्राप्त करनेवाले पूर्णकालिक विद्यार्थियों का मुख्य दल।

10 लिपिकों, सहायकों तथा हाथ से काम न करने वाले (नॉन मैनुअल) प्रबंधकों तथा मान्य व्यवसायों के स्तर के नीचे के ।

11 माध्यमिक स्कूल के अध्यापक और स्थानीय निकायों के अधिकारी का उच्च स्तर, सामाजिक तथा राजनीतिक कार्यकर्ता।"

डॉ0 वी0 वी0 मिश्र लिखित उपर्युक्त लम्वी सूची से स्पष्ट होता है कि मध्यवर्ग में विभिन्न क्षेत्र और आर्थिक स्तर के लोग सम्मिलित है उच्चवर्ग एवं निम्नवर्ग की तुलना में मध्यवर्ग का क्षेत्र अत्यन्त व्यापक है मध्यवर्ग समाज का वहुत बड़ा वर्ग है। समाज का शायद ही ऐसा कोई क्षेत्र है जहाँ मध्यवर्ग न हो।

1. 3. 4. 3 निम्नवर्ग

इस वर्ग का समाज में वह क्षेत्र होता है जिसका समाज में स्थान सवसे नीचे रहता है। इस वर्ग के लोग अपना सम्पूर्ण जीवन समाज के उच्चवर्ग तथा मध्यवर्ग की सेवा करके विता देते हैं। समाज का यही वर्ग उत्पादक होता है। इस वर्ग को देश के सभी हिस्सों में पा सकते हैं। इसमें किसान तथा अन्य सर्वहारा लोग आते हैं। शहरी निम्नवर्ग के नाम से वे लोग आते हैं जिनका काम मिलों-कारखानों में होता है। इसके साथ दफ्तरों, होटलों तथा अन्य संस्थानों में सेवारत नौकर-चाकर, कम आय वाले सरकारी कर्म चारी आदि आते हैं। इस वर्ग में अशिक्षा व्याप्त रहती है। इस कारण इस वर्ग के लोगों का समाज के दोनों वर्गों के द्वारा भरपूर शोषण किया जाता है। इस वर्ग के सदस्य अंधविश्वासों, रूढ़ियों तथा पुरानी

मान्यताओं से जकड़े रहते हैं। इसके सदस्य संतोषी प्रवृत्ति के होते हैं। इनकी आय इनके जरूरत से बहुत कम होती है इस कारण ये कुपोषण के शिकार आते हैं। सब मिलाकर यह कहा जा सकता है कि यह वर्ग दुर्दिन को झेलने वाला होता है।

1. 3. 5 मध्यवर्ग की आर्थिक स्थिति

अर्थ का महत्व हर समय के लिये महत्वपूर्ण होता है। अर्थ के द्वारा समाज में कोई व्यक्ति धनवान तथा निर्धन हो जाता है। अर्थ समाज का वह अंग होता है जिसके माध्यम से समाज के व्यक्ति अपनी सामाजिक स्थिति निर्धारित करता है। जिस व्यक्ति की आर्थिक स्थिति अच्छी होती है वह समाज का प्रतिष्ठित व्यक्ति माना जाता है। जिसकी स्थिति अच्छी नहीं होती वह समाज का निरीह माना जाता है। आर्थिक दृष्टिकोण से मध्यवर्ग समाज का वह व्यक्ति होता है जो न तो बहुत धनवान होता है और न ही बहुत ही निर्धन। इस वर्ग के उच्च मध्यवर्गीय समाज का व्यक्ति जहाँ आर्थिक दृष्टिकोण से बहुत मजबूत होता वहीं निम्नमध्यवर्गीय बहुत हीन होता है। यह बात जहाँ सच है कि अर्थ ही समाज के किसी वर्ग का निर्धारण नहीं कर सकता है वहीं यह भी सच है कि अर्थ की भूमिका वर्ग के निर्धारण में कम नहीं होती। इसलिये उक्त वर्ग के अस्तित्व को देखने के लिये इस वर्ग के आय के स्रोत के साथ आर्थिक पक्ष-मकान, रहन-सहन, पारम्परिक मान्यतायें, रूढ़ियों आदि को देखना भी चाहिये। मध्यवर्गीय समाज का व्यक्ति सुनिश्चित आमदनी को बहुत अहमियत देता है। आर्थिक दृष्टिकोण से अनिश्चयता प्राप्त व्यक्ति समाज में बड़ी हिकारत की निगाह से देखा जाता है। वैसे यह भी सच है कि आर्थिक सुनिश्चितता के द्वारा अपने जीवन को संतुलित तथा जीवन की आवश्यकताओं को पूरा कर पाता है। मध्यवर्ग के आर्थिक पक्ष को देखने के लिये इस वर्ग के तीनों पक्षों-उच्चमध्यवर्ग, मध्यमध्यवर्ग तथा निम्नमध्यवर्ग की इस दृष्टिकोण से छानबीन करनी जरूरी है।

1. 3. 5. 1 उच्च मध्यवर्ग

मध्यवर्गीय समाज का यह वर्ग आर्थिक दृष्टिकोण से मध्यवर्ग के सभी वर्गों से मज़बूत होता है। इस वर्ग की महत्वाकांक्षा अन्य वर्गों की तुलना में बहुत ज्यादा होती है। यह वर्ग की आर्थिक सुदृढ़ता समाज के उच्चवर्ग की तुलना में थोड़ा ही नीचे रहती है। इस वर्ग की सामाजिक हैसियत सबसे अधिक होती है। इस वर्ग में समाज के बड़े-बड़े उद्यमी, बड़ी नौकरियों के ऑफिसर, आदि आते हैं। इस वर्ग से ही राजनीति में आये हुये लोग रहते हैं।

1. 3. 5. 2 मध्यम मध्यवर्ग

यह समाज का वह वर्ग होता है जो उच्चमध्यवर्ग से नीचे तथा निम्नवर्ग से ऊपर का होता है। इस वर्ग के लोग समाज के सबसे संवेदनशील होने के साथ-साथ अपने अधिकारों के प्रति बहुत सचेत रहता है। इस वर्ग का व्यक्ति अपने आर्थिक अधिकारों के प्रति सजग तथा अपनी आर्थिक हैसियत को बढ़ाने की फितरत में लगा होने के कारण दूसरों का आर्थिक शोषण करने में जरा भी नहीं हिचकता। सिविल कर्मचारी और अन्य सरकारी कर्मचारियों का मुख्य दल, जिसमें कृषि, शिक्षा, सरकारी निर्माण विभाग, परिवहन, संचारण आदि विभागों के कर्मचारी सम्मिलित हैं। वैतनिक या अन्य प्रकार के मुख्य रूप से

मान्य व्यवसाय यथा- वकील, डॉक्टर, लेक्चरर प्रोफेसर, लेखक का उच्च मध्यवर्ग, पत्रकार, संगीतज्ञ, कलाकार, धार्मिक प्रचारक और पुरोहित। भूमि के मध्यस्थिति के मालिक यथा- किसान मालिक, राजस्व देने वाला किसान, विना कमाई आय पर रहने वाले या भूमि का आंशिक रूप से स्वयं प्रबंध करते हों। अच्छे दुकानदार तथा होटल वाले, जिसमें इस क्षेत्र में काम करनेवाले प्रवंधक, लेखाकार और संयुक्त पूँजी कम्पनियों में नियुक्त अन्य अधिकारी भी सम्मिलित हैं। ग्राम्य क्षेत्र में भूमि सम्पदा पर अनेक वैतनिक प्रबन्धों पर नियुक्त करने वाले बगान उद्योग में लगे हुए उद्योगकर्ता। विश्वविद्यालय या किसी स्तर की शिक्षा संस्था में उच्च शिक्षा प्राप्त करनेवाले पूर्णकालिक विद्यार्थियों का मुख्य दल। लिपिकों, सहायकों तथा हाथ से काम न करने वाले (नॉन मैनुअल) प्रबंधकों तथा मान्य व्यवसायों के स्तर के नीचे के। माध्यमिक स्कूल के अध्यापक और स्थानीय निकायों के अधिकारियों का उच्च स्तर, सामाजिक तथा राजनीतिक कार्यकर्ता। इन सबकों मध्यम मध्यवर्ग में शामिल किया जा सकता हैं। इस वर्ग में शामिल लोगों की आर्थिक स्थिति सुनिश्चित होती है। इस वर्ग का व्यक्ति बहुत हिसाबी होने के बाद भी मान-मर्यादाओं के लिये अर्थ की परवाह नहीं करता।

1. 3. 5. 3 निम्न मध्यवर्ग

मध्यवर्गीय समाज के सभी वर्गों में यह आर्थिक दृष्टिकोण से बहुत कमजोर होता है। इस वर्ग के लोग आर्थिक विषमता की चक्की में हर समय पिसने के लिये मजबूर होते हैं। यह वर्ग अभाव की मार को झेलने के कारण अपनी उपर्युक्त भोजन, शिक्षा, आवास आदि की समुचित व्यवस्था नहीं कर पाता। निम्नमध्यवर्गीय समाज के परिवारों में यह देखा जाता है कि कमाने वाला एक तथा खाने वाले एकाधिक। परिवार के सभी सदस्य अपनी क्षमता के अनुरूप काम नहीं करते। इस कारण इस वर्ग की आर्थिक स्थिति बहुत दयनीय होती है। पैसे के अभाव के कारण इस वर्ग के नवयुवक समुचित शिक्षा को नहीं प्राप्त कर पाता। इसलिये इस वर्ग की आर्थिक स्थिति में सुधार की संभावना नजदीक नहीं दिखाई पड़ती। अर्थाभाव के कारण यह वर्ग अशांत रहता है। इस वर्ग में परिवार के सदस्यों को समुचित आहार नहीं मिल पाता। यह वर्ग अर्थाभाव के कारण बहुत दीन-हीन होकर जीता है। बीमार होने पर ठीक से दवा-दारू नहीं करा पाता। निम्न मध्यवर्गीय समाज का व्यक्ति भी मध्यवर्ग के अन्य वर्गों की भाँति सुनिश्चित आमदनी के लिये निरन्तर संघर्ष करता रहता है और प्राय: थककर हार जाता है।

निष्कर्षत: मध्यवर्गीय जीवन की आर्थिक स्थिति को इस प्रकार स्पष्ट किया जा सकता है--

1 मध्यवर्गीय समाज का व्यक्ति अर्थाभाव के कारण अर्थहीन जिन्दगी जीने के लिये अभिशप्त रहता है।

2 मध्यवर्गीय समाज के व्यक्तियों की आय का स्रोत बहुत कम होता हैं। इस वर्ग के लोगों की आमदनी का स्रोत प्राय: नौकरी होता है। इस कारण अर्थार्जन करना इसका सब लक्ष्यों से बड़ा होता है।

3 यह वर्ग आर्थिक सुरक्षा पाना चाहता है। जब तक यह वर्ग आर्थिक सुरक्षा को नहीं प्राप्त कर लेता तब तक शादी-विवाह की जिम्मेदारी से अपने आपको बचाता रहता है

4 यह वर्ग हिसाबी प्रवृत्ति का होने के कारण अपनी आय देखकर तथा उसके हिसाब से अपना तथा अपने घर का बजट बनाता है।

5 धनाभाव के कारण इस वर्ग की आशा-आकांक्षाओं पर तुषारापात होता रहता है। इस कारण यह वर्ग प्राय: दिग्भ्रमित होकर विवशता की जिन्दगी जीता है। कभी यह अपनी जिम्मेदारियों से पलायन कर जाता है तो कभी आत्महत्या करने की कोशिश करता है।

6 महंगाई, बेरोजगारी तथा आर्थिक शोषण के नये-नये हथकण्डों के कारण इस वर्ग ने रिश्तों को नये ढंग से देखा। इसके बावजूद इस वर्ग में दिखावे की प्रवृत्ति आज भी देखी जाती है।

7 मध्यवर्गीय समाज के विवाह, प्रेम, रिश्ते-नाते, मान-सम्मान, लेखन, राजनीति आदि सभी में अर्थ-तंत्र की महिमा देखी जाती है। इस वर्ग के लिये अर्थ ही भगवान बन गया है और उसकी प्राप्ति के लिये यह लाचारी, गुनहगार, भ्रष्टाचार, चोरी, बेईमानी, आदि का रास्ता अपना लेता है तथा नैतिक मूल्यों एवं आदर्शों की बलि चढ़ा देता है।

1. 3. 6 मध्यवर्ग की सामाजिक स्थिति

मध्यवर्ग की सामाजिक स्थिति उसके आर्थिक हैसियत के हिसाब से प्राय: आँकी जाती है। लेकिन इस वर्ग की सामाजिक स्थिति का आकलन मात्र आर्थिक हैसियत से नहीं किया जाना चाहिये। यह वर्ग समाज के उच्चवर्ग तथा निम्नवर्ग की तुलना में ज्यादा सामाजिक एवं पारिवारिक होता है। यह वर्ग सामाज की सारी मान मर्यादाओं को बहुत तल्लीनता से निबाहता है। विवाह, दहेज, पारिवारिक जीवन, प्रेम, जातीय व्यवस्था, रूढ़िगत परम्पराओं, रीति-रिवाजों की जड़ता, शिष्टाचार का खोखलापन, इज्जत का ख्याल, बदनामी का डर आदि का बहुत ध्यान देता है। समाज में इन सब के कारण इस वर्ग की सामाजिकता समाज के अन्य वर्गों की तुलना में बहुत ज्यादा होती है।

निष्कर्षत: मध्यवर्गीय जीवन की सामाजिक स्थिति को इस प्रकार स्पष्ट किया जा सकता है--

1 सामाजिक दृष्टिकोण से मध्यवर्ग सामाजिक प्रतिष्ठा को ही अपना सबकुछ समझता है और उसकी रक्षा के लिये हर संभव कोशिश करता है।

2 इस वर्ग के व्यक्तियों को अपनी बदनामी का जितना डर रहता है उतना दुनियाँ में और किसी भी चीज का नहीं।

NBU, DARJEELING LIBRARY

223049
24 APR 2010

3 यह वर्ग सामाजिक रूढ़ि-परम्पराओं का बोझ अपने कंधे पर समाज के अन्य दूसरे वर्ग की तुलना में ज्यादा ढो रहा है, किन्तु इस वर्ग के कुछ पढ़े-लिखे आधुनिक विचारों वाले युवक रूढ़िगत परम्पराओं को तोड़ना बेहतर समझते हुये उन रूढ़ परम्पराओं को तोड़ रहे हैं जो परम्परायें अप्रसांगिक हो चुकी हैं।

4 मध्यवर्गीय समाज का व्यक्ति ठीक समय पर अपने बच्चों का विवाह करा देने में अपनी सबसे बड़ी सफलता मानता है तथा इसी में अपनी सामाजिक प्रतिष्ठा पाता है। यह वर्ग बच्चों की पसन्द-नापसन्द को महत्व न देकर समाज के उन लोगों को महत्व देता है जो समाज में अभिभावकी की जिम्मेदारी निभाने में कुशल होते हैं। इधर समाज में आधुनिक पढ़ी-लिखी पीढ़ी में घर के बड़े बुजुर्ग की पसन्द तथा नापसन्द को नजर अन्दाज करके अपनी इच्छानुसार शादी की थोड़ी-बहुत प्रथा बढ़ी है। फिर भी यह इतना नहीं बढ़ पाया है कि इसके दम पर इस वर्ग में समायी जातिगत कुरीतियों को तोड़ा जा सके, अत: इस वर्ग में आज भी जातिगत सामाजिक कुरीति फन काढ़े बैठा है।

5 मध्यवर्गीय समाज में संयुक्त परिवार का एक समय बहुत महत्व था लेकिन आधुनिक समय ने इस सुगठित परम्परा पर प्रश्न चिन्ह जैसे लगा दिया हो। इस वर्ग का बहुधा सदस्य नौकरी पेशा होता है। इसके चलते व्यक्तिगत महत्वाकांक्षाओं के कारण सबसे ज्यादा संकट में आज संयुक्त परिवार है।

6 यह वर्ग शिष्टाचार के खोखलेपन को आजीवन ढोता है। घर में चाहे यह वर्ग जिस तरह से रहे लेकिन इस वर्ग का व्यक्ति जब बाहर निकलता है या इस वर्ग के परिवार में बाहर का कोई व्यक्ति जब आता है तब यह व्यक्ति अपने खोखलेपन, तथा प्रदर्शनप्रियता से बाज नहीं आता है।

7 उच्च तथा निम्न इन दोनों की अपेक्षा मध्यवर्ग की स्थिति अत्यंत विचित्र हो गयी। एक ओर योग्यता तथा साधनों के अभाव में निम्नवर्ग जहाँ था वहीं है और इस बात की चिन्ता करने की क्षमता उसमें न होने के कारण वह निश्चिंत है। दूसरी ओर उच्चवर्ग साधन-सम्पन्न होने के कारण तथा देश की बाग-डोर संभालने के कारण निश्चिन्त है। लेकिन मध्यवर्ग अपने पास योग्यता तथा क्षमता रखने के बावजूद अपनी आकांक्षा पूरी नहीं कर पाने के चलते चिंतित, निराश, घुटनभरी जिन्दगी जीने को विवश है। इस वर्ग के पास क्षमता समाज के अन्य वर्गा की तुलना में अधिक होने के बावजूद सबसे ज्यादा असमर्थता को झेलता है।

1. 4 नव मध्यवर्ग

आजादी मिलने के बाद भारतीय समाज के मध्यवर्ग में अचूक परिवर्तन हुआ है। इस वर्ग ने समाज के अन्य दो वर्गों की तुलना में ज्यादा परिवर्तन किया। इसने स्वविकास के लिये चतुर्मुखी विकास योजना को अपनाया। सामाजिक सम्मोहन यह छोड़ने लगा। विश्व की समस्त बड़ी से बड़ी क्रांतियों का प्रणेता यही है। इसके द्वारा बनाये गये सामाजिक वितान को चुनौती देने वाला कोई नहीं था। इस वर्ग के पास जन समर्थन समाज के दोनों वर्ग की तुलना में ज्यादा था। आज इस वर्ग की मानसिकता में जिस तरह के विस्तार को पाया जा रहा है उसका पिछले किसी भी समय के मध्यवर्गीय समाज से मेल नहीं खाता।

आज मध्यवर्गीय समाज का व्यक्ति उसी मानसिकता का शिकार हो गया है जिसका राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन के समय पुरजोर विरोध किया था। उपनिवेशवादी मानसिकता का आजाद भारत में सबसे ज्यादा संवहन इस वर्ग में दिखायी पड़ रहा है। इसी का नतीजा है देश में फिर से औपनिवेशिक शक्तियों का हमला। इस वर्ग ने अपने आपको परिभाषित करने के लिये विचार शक्ति को तिलंजली देते हुये औपनिवेशिक शक्तियों की ओर उन्मुख हुआ। अपनी समझ इस कदर दूसरों के हवाले कर दिया कि धीरे-धीरे दिमागी तौर पर कुन्द होता चला जा रहा है। इस कारण इसे अपनी जमीन से कटने का दुख नहीं है। नव मध्यवर्ग समाज में उसी सामाजिक संरचना से खुश होना चाहता है जिसको उपनिवेशिक शक्तियों ने देश में शोषक तथा शोषित के बीच के फर्क को सामने लाने के लिये किया था आज समाज का सभी वह जिसके पास शिक्षा है ताकत है वह समाज विभाजन में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन के दौरान जहाँ इस वर्ग से यह उम्मीद की गयी थी कि देश के संरचनात्मक पहल में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभायेगा उस पर यह खरा नहीं उतरा। आजादी मिलने के साथ जिस तरह अपने भीतर स्वार्थ भरता चला गया वह सबको आश्चर्य में डालने वाला है।

मध्यवर्ग के भीतर आये परिवर्तन को विभिन्न अनुच्छेदों में इस प्रकार देखा जा सकता है।

1. 4. 1 सामाजिक स्थिति

नव मध्यवर्ग की सामाजिक स्थित बिल्कुल बदली हुयी है। इसके पास अब न पुराने समय जैसा परहित कर्म करके सामाजिक प्रतिष्ठा पाने की ललक है और नही बाप दादों की तरह किसी सामाजिक मर्यादा से बँधकर रहना चाहता है। सामाजिक प्रतिष्ठा का मतलब किसी भी तरह से धन एवं शक्ति का संचय हो गया। पुराना मध्यवर्ग जहां इज्जत को सबकुछ समझता था। आज यह समाज से पूरी तरह से कटा होने के कारण इज्जत के बारे में बहुत गंभीर नहीं है। बाजारवादी व्यवस्था में पूरी तरह से फिट होने के लिये संघर्षरत यह वर्ग समाज को किसी भी तरह से समय नहीं दे पा रहा है। बाजार का सबसे बड़ा आक्रमण इस वर्ग पर होने के कारण धन कमाना बहुत जरूरी हो गया। धन संग्रह की लालसा ने सब तरह के सामाजिक आदर्श से इसको च्यूत कर दिया है। रूढि-परम्पराओं को बेवजह ढोने से पहले जहाँ मध्यवर्गीय समाज कतराता था। इसको स्वीकारने के लिये तर्क का सहारा लेता था। आज मामला पूरी तरह से उलट गया है। बाजारवादी शक्तियाँ रूढ़िगत मान्यताओं के कंधे चढ़कर अपने स्वार्थों को पूरा कर रही हैं। इसके माध्यम से समाज के बहुत बड़े तबकों के साथ इस समाज के नवयुवकों को अपने सिकंजे में आसानी से ले पा रहीं है। इसके माध्यम से ये शक्तियाँ समाज में अलगाव स्थापित कर पाती हैं तथा अपने विरुद्ध खड़े होने वाली समूह भावना को ही खत्म कर देती हैं। नव मध्यवर्ग नव साम्राज्यवादी शक्तियों की चपेट में इस तरह से फँसा हुआ है कि समाज को संपूर्णता में देखना ही नहीं चाहता। समाज में ऐसी विभेदक शक्तियों की तरफ इशारा करते हुये पूरन चंद्र जोशी का कहना है- "शिक्षित वर्ग और मध्यम वर्ग और जन साधारण के अलगाव को भारतीय समाज की दूसरी सबसे बड़ी आंतरिक कमजोरी, आंतरिक दरार के रूप में पहचानना गाँधी-दृष्टि की सबसे बड़ी खूबी थी, जिसको कारगर ढंग से इस्तेमाल कर उपनिवेशवाद भारत में दो सदियों से अधिक हावी रहा था। पहली कमजोरी जिसे हम पहले ही रेखांकित कर चुके हैं, वह थी भारत के बुद्धिजीवी वर्ग द्वारा पश्चिमी सभ्यता के ही आधुनिक सभ्यता

का पर्याय मानना, यानी पश्चिमीकरण के कार्यक्रम और रणनीति का राष्ट्रीय जागरण के मुख्य कार्यक्रम और रणनीति के रूप में स्वीकार। पश्चिमीकरण का आदर्शीकरण और मिथकीकरण इसका मूल काम था और मुख्य काम भी। इसी के फलस्वरूप शिक्षित वर्ग तथा मध्यम वर्ग में आत्म-गौरव और आत्मविश्वास का ह्रास हुआ और औपनिवेशिक मानसिकता या महज पश्चिम के अनुकरण की प्रवृत्ति का जबर्दस्त प्रसार हुआ।"[34] पश्चिमीकरण को मुख्यरूप से नवजागरण के रूप में स्वीकार कर लेने के पश्चात भारतीय शिक्षित वर्ग विशाल जन समुदाय से अलग हो गया। इसकी सबसे बड़ी ताकत इसके हाथ से छूटती गयी। इसने अपने को समाज मानने की भूल कर दिया। इसके तहत सारी सुविधाओं को अपने हक में कर लेने की होड़ सी लगने के कारण समाज में अलगाव बढ़ता गया। समाज के जन सामान्य को पिछड़ा हुआ, सभ्यता-संस्कृति से निर्वासित, दयनीय, दरिद्र और उसे इतिहास के घटना-चक्र के हाथ का खिलौना समझने लगा। इसके पणिाम स्वरूप शिक्षित नव मध्यवर्ग और जन साधारण के बीच बढ़ते दरार और उसके अंतर्विरोधों को मिटाने का इनके पास न तो कोई रास्ता है और न रास्ता खोजने की कोशिश करते है।

उदारीकरण ने मध्यवर्ग की हालत ज्यादा बदस्तूर कर दिया। इसके कारण पहले से गरीबों को नजर अंदाज करने वाला मध्यवर्ग और भी ज्यादा क्रूर हो गया। इसके कारण सामाजिक जीवन में सामुदायिकबोध की भावना खत्म होने लगी। इस प्रवृत्ति के संवहकों में जहाँ पहले जोर रहता था। इधर मध्यवर्गीय समाज गरीबों को हटाने की वकालत करने लगा। इस वर्ग को देश की वास्तविकता से ज्यादा मतलब उदारीकरण द्वारा की जाने वाली खोखली उद्घोषणाओं से है। इसके परिणाम स्वरूप इसने पश्चिमी सामाजिक मॉडल को ललचायी दृष्टि से देखते हुये स्वीकारने की वकालत करने लगा। पाश्चात्य सामाजिक मॉडल के चकाचौध में फंसा भारतीय नव मध्यवर्ग को इस बात से कुछ लेना नहीं है कि वह जिस देश में रह रहा है वहाँ की जनता गरीबी रेखा के नीचे भी रहती है। बहुत से लोग यहाँ पर ऐसे भी हैं जिनको दो जून की रोटी नसीब नहीं होती। मध्यवर्गीय साधन सम्पन्नों के भीतर किसी भी तरह की संवेदना नहीं रह गयी। भारत को दो हिस्सों में बाँटने में नवमध्यवर्ग ने अहम भूमिका निभायी। नवमध्यवर्ग के पास वह दूरदर्शिता नहीं रह गयी है कि वह सामाजिक एकान्मयता को स्थापित कर सके। निष्कर्षत: यह कहा जा सकता है कि समाज के जिस वर्ग पर सामाजिक संबंध बनाने की जिम्मेदारी थी वही दिगभ्रामित है।

1. 4. 2 धार्मिक स्थिति

बाजारवादी सामाजिक व्यवस्था ने मध्यवर्ग को सबसे ज्यादा कमजोर किया। बाजारवादियों का कहना था समाज में बहुदेशीय कम्पनियों के आने से देश में रोजगार के नये अवसर मिलेंगे। भूमण्लीकरण के बीस वर्ष के पस्चात यह आराम से देखा जा सकता है समाज में शिक्षित युवा वर्ग में बेकारी बहुत तेजी से बढ़ रही है। दिगभ्रमित युवा किसी जगह रास्ता न पाकर या तो गलत रास्तों पर जाते हुये आतंक आदि को अपना रहा है या धर्म की आड़ में शरण ले रहा है। हतोत्साहित नव मध्यवर्ग को दोनों हाथों से धार्मिक संस्थान लूटने लगे हैं। इनके ही दम पर समाज से गायब धार्मिक रूढ़ियों को फिर से सामने लाया जा रहा है। मंदिरों मे उन नवयुवको को लंबी कतारों में घंटों समय बिताते देखा जाता जिनको उपनी उर्जा

संरचनात्मक विकास में लगाना चाहिये। धार्मिक स्थानों पर जाने वालों में सबसे ज्यादा संख्या मध्यवर्गीय समाज के युवको का होता है। दिशाहीन हो गया यह वर्ग अपने से ज्यादा भगवान पर भरोसा करने लगा है। इस प्रवृत्ति से नित नये देवी-देवता प्रकट हो रहे हैं। प्रकट हुये इन देवी देवताओं को पहले सामान्य जन जानता तक नहीं था। नव मध्यवर्ग के दिशाहीनता का परिणाम है कि गनेश चतुर्थी, जागरण जैसे त्यौहारों पर मूर्खतापूर्वक झूमना। धार्मिक मंडियों की चांदी चमक रही है। संगीता वर्मा का कहना है- "यह समझना भूल होगा कि धर्म के लिये लोगों की श्रद्धा बढ़ गयी है। वास्तविकता तो यह है कि मध्यमवर्ग के प्रचुर उपभोक्तावाद का हिस्सा यह धार्मिक शोशेबाजी है।"[34] आजादी के बाद जहाँ इस वर्ग ने धर्म को बौद्धिकता से जोड़ने की कोशिश किया था आज वह पूरी तरह से खंडित हो चुका है। भारतीय समाज के अनेक आलोचकों का कहना है कि हमारे यहाँ साम्प्रदायिकता की जो अभिव्यक्ति बाबरी मस्जिद, मुम्बई विस्फोट और इंदिरा गांधी की मृत्यु के पश्चात् हिंसात्मक तनाव फैला उसमें मध्यवर्ग की भूमिका बहुत जबरदस्त है। यह वर्ग इतना खुदगर्ज बन गया कि अपने हितो को पूरा करने में किसी भी हद तक जा सकता है। इन्हीं बातों का परिणाम है कि विभिन्न धार्मिक ब्रांडों का उदय होना। उनका उपयोग मध्यवर्गीय समाज का व्यक्ति अंधभक्त होकर स्वीकार रहा है। रामकथा, प्रवचन, और बाबा लोगों का जोरदार प्रवल हो गया है। धर्म मध्यवर्गीय समाज के लिये उन्माद की स्थिति में पहुँच गया। मध्यवर्गीय समाज को इस स्थिति में पहुचाने में उदारवादी नीतियों की प्रमुख भूमिका है। मध्यवर्गीय समाज के लिये जरूरी है कि अपनी जड़ता खत्म करने के लिये स्वलोचना अपनी जमीन को देखते हुये करें।

1. 4. 3 आर्थिक स्थिति

इस वर्ग की आर्थिक स्थिति में बहुत परिवर्तन हुआ। इसके आर्थिक उन्नति हेतु सरकार भी ज्यादा सक्रिय दिखाई पड़ती है। नव मध्यवर्ग शिक्षित तथा बहुत बड़े लक्ष्यों को लेकर चलने वाला है। अर्थार्जन हेतु यह किसी भी लीक को स्वीकार नहीं करता। शिक्षा ने इस वर्ग को नयी सोच एवं धनार्जन के नये-नये द्वार खोले। पहले यह वर्ग जहां जोड़ घटाव के पश्चात खर्च करता था। आज पहले की तुलना में भारतीय मध्यवर्ग हाथ खोलकर खर्च करने लगा है। इसके भीतर आये इस बदलाव को ध्यान में रखते हुये बाजारवादियों ने भारत को विभिन्न संभावनाओं वाला देश घोषित किया। इस वर्ग की महत्वाकांक्षा पहले की तुलना में बढ़ी है। बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ देश के इस वर्ग में बदलती प्रवृति को ध्यान में रखते हुये नित नये-नये ब्रांडों को बाजार में उतार रहा है। सरकार मध्यवर्गीय समाज को आर्थिक रूप में सुदृढ़ करने के लिये विभिन्न तरह से संसोधनों को लाया। देश में होने वाले 'पे रिवीजनों' को करते समय कभी भी देश की उस जनता की तरफ नहीं देखा जाता जिनको एक वक्त की रोटी के लिये संघर्ष करना पड़ता है। आज मध्यवर्गीय समाज के लिये सरकार जितनी चिन्तित है उससे ज्यादा चिन्ता है बाजार में पैसे के प्रवाह को लेकर। मध्यवर्गीय समाज का व्यक्ति रूपये की थैली को बड़ा देखता है। तनख्वाह की रकम जितनी ज्यादा हो रही है बाजारवादियों की नीतियों के कारण भीतर-भीतर यह फकीर होता जा रहा है। धन की चरम लालशा के कारण समाजविहीन मध्यवर्ग पूरी तरह से कटा है। उसके पास रूपया दिखता भले है टिकता नहीं। प्राय: मध्यवर्ग विभिन्न तरह के लोन से पटा है। ये सब बातें मध्यवर्ग को निराशा दे रहीं हैं। समाज में फैलती आर्थिक असमानता को रोकना जितना ज्यादा जरूरी समाज के

अन्यवर्ग के लिये है उससे ज्यादा जरूरी है खुद मध्यवर्ग के लिये। ऐसा करने से इस वर्ग को टूटने से बचाया जा सकेगा। इस वर्ग के बुद्धिजीवियों के लिये यह जरूरी हो गया है कि उन तत्वों की पहचान करें जिसके कारण इस वर्ग की यह हालत हुई है। इस वर्ग को पाश्चात्य सामाजिक मॉडल से अपने आपको ऊपर उठाना होगा। पूँजीवादी उपभोक्तावादी शक्तियाँ है पाश्चात्य सामाजिक मॉडल को आरोपित करना। निष्कर्षत: कहा जा सकता है नवमध्यवर्ग के पास पहले की तुलना में आर्थिक सुदृढ़ता पहले से ज्यादा होने के बावजूद यह निराश है दिशाहीन है। इसके अलावा नवमध्यवर्ग में दिखावा, आत्मप्रशंषा आदि का बोल बाला बढ़ा है। इसके कारण मध्यवर्ग नैतिक रूप में कामजोर होता चला जा रहा है।

देश का शिक्षित नवमध्यवर्ग जहाँ पहले अपने आपको देश को सही दिशा देते हुये देश की मिट्टी के साथ जुड़ते हुये वृहत्तर जन सामान्य को दिशा देने के दायित्व को अपन कर्तव्य मानता था। इसमे गर्व महसूस करता था कि जन सामान्य को सही दिशा दे पा रहा है। इसके लिये मध्यवर्गीय समाज को बड़े से बड़ा त्याग करते हुये देखा गया है। त्याग और बलिदान तथा परहित की भावना को मध्यवर्ग सामाजिक चरित्र मानता था आज का नव मध्यवर्ग इन भावनाओं को ही बेकार की वस्तु मानने लगा है। इसके लिये अब इस बात से कोई मतलब नहीं रह गया है कि उसका पड़ोसी किस तरह की समस्या झेल रहा है। इनको सबसे ज्यादा चिन्ता होती है स्व दुख और सुख की। शिक्षित मध्यवर्ग अपने आपको देश के जन सामान्य की हालत में सुधार के लिये किसी भी तरह के प्रयास को नहीं किया। संगीता वर्मा का कहना है "शिक्षित वर्ग स्वयं को ही भारत का पर्याय मानने की भ्रांति का शिकार है। यह इस भ्रांति से तभी मुक्त होगा जब वह असली भारत की खोज का संकलन करे और गांवों में जाकर दरिद्रनारायण के दर्शन करे और उनकी सेवा का व्रत ले।"[34] महात्मागांधी के इस कथन को दर किनार कर दिया गया है। आज के मध्यवर्गीय समाज मे जबरस्ती महात्मागांधी के विचार को बाहर किया जा रहा है। महात्मागांधी के खिलाफ साबूत जुटाये जा रहे हैं। गांधी जी अपने समय में ही देश के इस वर्ग की मानसिकता को पहचान चुके थे उन्होंने स्वयं स्वीकार किया था " मुझे अहसास है कि मेरे और शिक्षित भारत के बीच में एक बड़ी खाई पैदा हो गयी है और आज का बुद्धिजीवी मेरे विचार और व्यवहार-पद्धति के विरोध में है।"[35] गांधी के समय देश का शिक्षित मध्यवर्ग अपने आपको जितना अलग मानता था उससे ज्यादा आज मान रहा है। यही कारण है कि पाश्चात्य विचारधारा को आगे बढ़ाने में देश की चिन्ता किये बगैर महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। भारत का शिक्षित मध्यवर्ग मानसिक गुलामी का शिकार हो गया है। उसे इस बात का जरा भी एहसास नहीं रहा कि इस देश में वास्तविक स्वतंत्रता के न आने का कारण है उसके द्वारा अपनायी गयी इस तरह की मानसिकता। देश को फिर से नयी गुलामी की जंजीर में बांधने में मध्यवर्गीय शिक्षित जन समूह का सक्रिय सहयोग है तथा इनके दबाव स्वरूप जन सामान्य की मूक स्वीकृति महत्वपूर्ण भमिका निभा रही है। आजादी बाद शिक्षित मध्यवर्ग में जिस तरह की संख्यात्मक वृद्धि हुयी उस तरह से गुणात्मक प्रभाव में बढ़ोत्तरी होती हुई दिखायी नहीं पड़ती। देश के शिक्षित वर्ग के लिये गांधी ने अपने विचार रखते हुये कहा था "शिक्षित वर्ग मौलिक ज्ञान का सृजक, संवर्द्धक और प्रचारक नहीं, उधार ली हुयी अवधारणाओं विचारों और उस पर आधारित व्यवहार-पद्धति का पोषक है। औपनिवेशिक मानशिकता से मुक्त हुये बिना शिक्षित वर्ग स्वायत्त बुद्धिजीवियों को जन्म देने में अक्षम हैं। यही कारण है कि भारत के विश्वविद्यालय मानसिक रूप

से गुलाम वर्ग को पैदा करने वाले कारखानों में तब्दील हो गये हैं।"[36] औपनिवेशिक भारत में उच्च शिक्षण संस्थानों को गुलामी फैलाने के हथियार के रूप में प्रयोग में लाया जाता था। देश आजाद हो गया देस की शिक्षा व्यवस्था के संरचनात्मक ढाँचे में किसी भी तरह के परिवर्तन को नहीं लाया गया। जिसके परिणाम स्वरूप नवमध्यवर्ग उसी काम को कर रहा है जिसको गुलाम देश के बहुसंख्यक मध्यवर्ग किया करता था। नवमध्यवर्ग का चरित्र आज पहले की तुलना बहुत बदला है। स्वार्थपरता इसमें पहले की तुलना में बढ़ी है। इसके बावजूद इस वर्ग को टक्कर देने वाला समाज का अन्यवर्ग सामने आने में असक्षम दिखायी पड़ रहा है। मध्यवर्ग के इस बदलते स्वरूप के कारण पश्चिमी देशों की राजसत्ताओं से जुड़े विचारकों में इस तथ्य पर बहस हो रही है कि उनके हितों को साधने के लिये किस तरह से इस वर्ग को हथियार की तरह प्रयोग में लाया जाय। अपने मंसूबे में सफल होने के लिये विकसित देशों ने विकासशील देशों के शैक्षिक संसाधनों में आर्थिक, सामाजिक और राजनीति को अपनी सुविधानुसार शोध के एजंडों के रूप में रख रहा है।

मध्यवर्ग के उस स्वरूप को हम आज नहीं देख पाते जिसको इसके शुरूआती दौर में पाया जाता था। इसके बदलते स्वरूप ने समाज को अपने ढंग से दिशा दी। इस वर्ग का समाज को संचालित करने में महत्वपूर्ण भूमिका दिखाई पड़ती हैं। इसके भीतर हो रहे सामाजिक बदलाव की तरफ आलोचकों ने ध्यान देते समय इसकी कमजोरियों को ज्यादा देखा। मध्यवर्ग की कमजोरियों को देखते हुये इस वर्ग के द्वारा समाज को दी जाने वाली दिशा को अलग ढंग से मूल्यांकित करना जरूरी है।

इस वर्ग ने कथा साहित्य को बड़े स्तर पर प्रभावित किया। कथा साहित्य का विकास मध्यवर्ग का विकास माना जा सकता है। सामान्य भारतीय समाज में हो रहे बदलाव को रेखांकित करते समय कथा साहित्य मध्यवर्ग को ही सामने लाता है। मध्यवर्ग के समुचित विकास को सामने लाने के लिये कथा साहित्य के संदर्भ में इस वर्ग का अध्ययन करना बहुत जरूरी है। इस जरूरत को ध्यान में रखते हुये इस अध्याय को रखा गया है। अमरकांत का कथा साहित्य मध्यवार्गीय समाज की वस्तु स्थिति को सामने लाने वाला है। शोध कार्य करते समय मध्यवर्ग के बदलते स्वरूप को इनके कथा साहित्य के माध्यम से सामने लाया जायेगा।

संदर्भ

1 अमरकांत का कथा साहित्य, बहादुर सिंह परमार, पृष्ठ 11, प्र0 शिल्पायन, प्र0 वर्ष 2007

2 आर. एम मैकाइवर तथा सी. एच.पेज, पृष्ठ 348, प्र0 सोसाइटी, प्र0 वर्ष 1948

3 जिंसवर्ग इन्साइक्लोपीडिया ऑफ दि सोशल साइंसेज, जिंसवर्ग, भाग 3, 4 पृ0 536

4 इन्साइक्लोपीडिया ऑफ दि सोशल साइंसेज, भाग 3-4, पृ0536

5 लेनिन फंडामेंटल ऑफ मार्कसिज्म लेनिनज्म, पृ0150

6 हिन्दी उपन्यासों में मध्यवर्ग, डॉ0 मंजुलता सिंह, पृष्ठ 2, प्र0 राजधानी प्रकाशन, वर्ष 1984

7 सोसल क्लास इन अमेरिकन सोसाइटी, मिल्टन एम.जार्डन, पृ03

8 इन्साइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका, भाग 5, पृष्ठ 450

9 हिन्दी उपन्यासों में मध्यवर्ग, डॉ0 मंजुलता सिंह, पृष्ठ 2, राजधानी प्रकाशन, वर्ष 1984

10 अमरकांत का कथा साहित्य, बहादुर सिंह परमार, पृष्ठ 11, प्र0 वर्ष 2007, प्र0 शिल्पायन

11 सोशियोलाजी, टी.बी.बटमोर, पृ0 171

12 हिन्दी उपन्यास में वर्ग भावना, डॉ0 प्रताप नारायण टंडन, पृ0103, प्र0 विवेक प्रकाशन, वर्ष 1970

13 नगरीकरण और हिन्दी उपन्यास, क्षमा गोस्वामी, पृ0 104, प्र0 विवेक प्रकाशन, वर्ष 1971

14 इंडियन हेरिटेज, हुमायूँ कवीर, पृ0 116-117, मैकमिलन इंडिया लिमिटेड, प्र0 वर्ष 1960

15 इंगलिश मिडिल क्लास, लुयाड और मॉडे, पृ0 04

16 हिन्दी कहानी में युगबोध, डॉ0 मंजुलता सिंह, पृ0 193, राजकमल प्रकाशन, प्र0 वर्ष 1985

17 पवन वर्मा, भारत के मध्यवर्ग की अजीब दास्तान, पृ0 22, प्र0 वर्ष 1999, राजकमल प्रकाशन

18 यथोपरि, पृष्ठ 22

19 भारतीय मध्यवर्ग, डॉ0 श्याम सुन्दर घोष, पृ0 2, प्र0 लोकभारती, प्र0 वर्ष 1979

20 हिन्दी साहित्य कोश, डॉ0 धीरेन्द्र वर्मा, पृष्ठ 621, प्र0 लोकभारती, प्र0 वर्ष 1974

21 कम्युनिस्ट पार्टी का घोषणापत्र, कार्ल मार्क्स फ्रेडरिक एंगेल्स, पृ0 32, प्र0 वर्ष 1997, प्र0नेशनल बुक एजेंसी प्रा0 लि0, कलकत्ता

22 यथोपरि

23 यथोपरि, पृष्ठ 45

24 यथोपरि

25 यथोपरि, पृष्ठ 49

26 दि इंगिलिश मिडिल क्लास, आर. एच.ग्रेटन, पृ0 1

27 दि इंडियन मिडिल क्लास, डॉ.बी.बी.मिश्र, पृ012-13, मैकमिलन इंडिया लिमिटेड, प्र0 वर्ष 1966

28 कामायनी: एक पुनर्विचार, गजानन माधव मुक्तिवोध, पृ0 45, राजकमल प्रकाशन, प्र0 वर्ष 1997

29 समकालीन हिन्दी उपन्यास: महानगरीय बोध बोध सीमा गुप्ता, पृ0 152, जयपुर
30 उपन्यासकार प्रेमचन्द की सामाजिक चिन्ता, सरिता राय, पृ0 126, प्र0वाणी प्रकाशन, प्र0 वर्ष 1996
31 कम्युनिस्ट पार्टी का घोषणापत्र, कार्ल मार्क्स फ्रेडरिक एंगेल्स, पृ0 48, प्र0 वर्ष 1997, प्र0नेशनल वुक एजेंसी प्रा0 लि0, कलकत्ता
32 दि इंडियन मिडिल क्लास, डॉ.बी.बी.मिश्र, पृ0 12, मैकमिलन इंडिया लिमिटेड, प्र0 वर्ष 1966
33 दादा कामरेड, यशपाल, पृ0 20, लोकभारती प्रकाशन, वर्ष 2001
34 भारतीय समाज, संगीता वर्मा, पृष्ठ 63, संजय प्रकाशन, प्र0 वर्ष 2007
35 स्वप्न और यथार्थ: आजादी की आधी सदी, पूरन चंद जोशी, पृ0 43, राजकमल प्रकाशन, प्र0 वर्ष 2003